सामवेद की उत्पत्ति

सामवेद की उत्पत्ति कब और कैसे हुई ? इस विषय में विद्वानों के मत अलग अलग हैं । इसमें कोई संदेह नहीं कि वेद भगवानउवाच व सृष्टि के आदि ग्रन्थ हैं । कुछ साहित्यकारों का मत है कि सामवेद की उत्पत्ति सागर से हुई तो कुछ बादल, वायु बिजली आदि से उत्पन्न मानते हैं । समुद्र की उत्ताल लहरों की गर्जना से स्वर फुटे यथा-

"सप्त स्वर सप्त सिन्धु से उठे
छिड़ा तब यहाँ साम संगीत"

अधिकांश मनीषी तर्क देते हैं कि संसार मे पहला शब्द 'द' बादलों की तड़कन से पैदा हुआ । अतः सामवेद भी बादल और तड़ित (बिजली) से पैदा हुआ है । जो भी हो आदि काल की सत्यता पर दिष्ट पेषाण करने से इतना तो प्रत्यक्ष है कि संगीत में कई स्वर होते हैं वे सभी स्वर कहीं एक ही स्थान या वस्तु से उत्पन्न हुए हों ऐसा नहीं कहा जा सकता है । सामवेद जैसा कि नाम से ही आभास मिलता है सामवेद स्वरों मे ही उत्पन्न हुआ लगता है । सभी वेदों को गति प्रदान करने में सामवेद की प्रमुख भूमिका है । यदि नवजात शिशु को माँ के स्तनपान का गुण न हो तो उसका अस्तित्व संसार मे न रहे । यही भूमिका सामवेद की अन्य वेदों की प्रति है । संगीत सभी को प्रिय लगता है कहते हैं रोना और गाना सभी को आता है । इस संदर्भ में एक किवदंती कही जाती है कि किसी विद्वान वृद्ध पिता के दो बेटे थे एक व्याकरण का ज्ञाता तथा दुसरा संगीत का ज्ञाता था । वृद्ध मृत्यु शैय्या पर पड़ा था अपने पहले बेटे को बुलाया और सामने खड़े एक सूखे पेड़ पर कुछ कहने का आदेश दिया । बेटेने

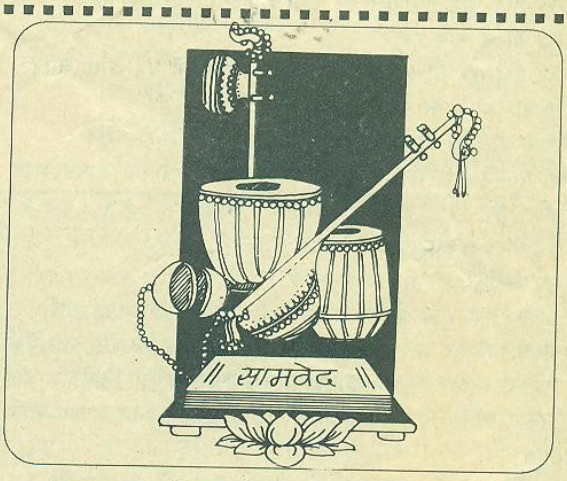

कहा **'शुष्कस वृक्षस्य तिष्टत अग्रे'** यह सुनकर वृद्ध की बेचैनी और बढ गई । उसने दूसरे बेटे से कुछ कहने को कहा उसने प्रथम की कही हुई बात को ही अपने संगीतमय ढंग से सुनाना शुरू किया **'नीरस तरूवः पुरतः अग्रे'** कहते हैं इतना सुनकर वृद्ध को काफी राहत महसूस हुई । सत्य है संगीत सभी को प्रिय लगता है ।

सामवेद के विषय में महान प्रणेता व भास्कर महर्षि उद्दालक ने अपनी ओर से कुछ नही लिखा है जितना कहा गया है उसका ही प्रतिपादन किया । कहते हैं इसमें स्वयं माँ सरस्वती ने उनको सहयोग दिया था । मेरे मतानुसार भी सामवेद समुद्र, बादल, बिजली, वायु आदि के समवेत स्वरों से उत्पन्न हुआ है । किसी एक ही वस्तु में सभी स्वरों का सामांजस्य मिलना मुश्किल है। अतः नाम से ही ज्ञात है सामवेद समवेत स्वरों का समूह है ।

☐ **कपिल पांडेय**